प्रातः क्लास 6/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों से रूह–रूहान करते हैं। रूहों से पूछते हैं; क्योंकि यह नई नॉलेज है ना। मनुष्य से देवता बनने की यह नई नालेज अथवा पढ़ाई है। यह कौन तुमको पढ़(ा)ते हैं? बच्चे जानते हैं रूहानी बाप हम बच्चों को ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं। यह भूलना न चाहिए। वह बाप है, फिर पढ़ाते भी हैं, तो टीचर हो गया। यह भी तुम बच्चे जानते हो हम पढ़ते ही हैं नई दुनिया के लिए। हरेक बात में निश्चय होनी चाहिए। नई दुनिया के लिए पढ़ाने वाला बाप ही होता है। मूल बात हुई बाप की हुई बाप हमको यह शिक्षा देते हैं ब्रह्मा द्वारा। कोई द्वारा तो देंगे ना। गाया हुआ है भगवान ब्रह्मा द्वारा राजयोग सीखाते हैं। या ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कराते हैं। जो धर्म अभी नहीं है। यह तो है ही कलियुग। तो सिद्ध होता है स्वर्ग की स्थापना हो रही है। स्वर्ग में जरूर आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले ही हैं। और कोई होते ही नहीं। इतने सभी जो धर्म हैं वह होंगे ही नहीं। अर्थात् विनाश हो जावेंगे; क्योंकि सतयुग में और कोई धर्म था नहीं। यह बातें तुम बच्चों की ही बुद्धि में हैं। अब तो अनेक धर्म हैं। अभी फिर बाप हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं; क्योंकि अब संगमयुग है। यह तो बहुत सहज बात समझाने की है। त्रिमूर्ति में भी दिखाते हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? स्थापना तो जरूर नई दुनिया की होगी। पुरानी की तो नहीं होती। बच्चों को यह निश्चय है। नई दुनिया में रहते ही हैं दैवीगुण वाले देवताएँ। तो अब हमको भी गृहस्थ व्यवहार में रहते दैवी गुण धारण करनी है। पहले2 काम पर जीत पहन निर्विकारी बनना है। कल इन देवताओं के आगे जाकर कहते थे कि आप सर्वगुण सम्पन्न सम्पूर्ण निर्विकारी हो हम विकारी हैं। अपन को विकारी फील करते थे; क्योंकि विकार में जाते थे। अभी बाप कहते हैं तुमको भी ऐसा निर्विकारी बनना है। दैवीगुण धारण करनी है। यह जो विकार है काम क्रोध लोभ मोह यह अगर है तो उनको दैवीगुण नहीं कहेंगे। विकार में जाना, क्रोध करना.....यह है आसुरी गुण। देवताओं में लोभ होगा। वहाँ तो 5 विकार होते ही नहीं। यह है ही रावण की दुनिया। रावण का जन्म होता है त्रेता और द्वापर के संगम पर। जैसे यह पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम है ना। वैसे यह भी संगम हो जाता। गाया भी जाता है राम–राज्य और रावण–राज्य। अभी तुम समझते हो रावण राज्य में बहुत दुख है। कितनी बीमारियाँ, रोग, लड़ाइयाँ आदि हैं। अनेक प्रकार के दुख हैं। इसको कहा ही जाता है रावण–राज्य। रावण को भी हर वर्ष बनाते हैं। चित्रों में भी रावण दिखाते हैं। यह है विकारी रावण–राज्य। वाममार्ग में जाने से सभी विकारी बन जाते हैं। बच्चे समझते हैं अभी हमको निर्विकारी बनना है। यहाँ ही दैवीगुण धारण करनी है। ऐसे नहीं कि नई दुनिया में दैवीगुण धारण करनी है। जैसा मनुष्य कर्म करते हैं ऐसा ही फल मिलता है। बच्चों से अभी कोई भी विकर्म न होना चाहिए। एक होता है राजा विकर्माजीत। फिर होता है राजा विकर्म। यह है विक्रमी सम्वत। यानी रावण विकारों का सम्वत। यह कोई समझते नहीं हैं। न कल्प की आयु का ही किसको पता है। वास्तव में विकर्माजीत होते हैं देवताएँ। 5000 वर्ष में 2500 वर्ष हुई राजा विकर्म की। 2500 वर्ष राजा विकर्माजीत का। तुम अभी विकारों पर जीत पहन रहे हो। उनको कहेंगे विकर्माजीत। आधा कल्प है विकर्माजीत, आधा कल्प है विकर्म का। वह लोग भल कहते हैं परन्तु कुछ भी पता नहीं है। तुम कहेंगे विकर्माजीत सम्वत इनसे शुरू होता है। फिर 2500 वर्ष विकर्म सम्वत शुरू होता है। अभी विकर्म सम्वत पूरा हुआ। फिर तुम विकर्माजीत महाराजा महारानी बन रहे हो। विकर्माजीत सम्वत शुरू हो जायेगा। यह सब तुम ही जानते हो। तुमको कहते हैं ब्रह्मा को क्यों बिठाया है। अरे तुम्हारी इनसे आकर क्यों पड़ी है। हमको पढ़ाने वाला यह कोई थोड़े ही है। हम तो उन(शिवबाबा) से पढ़ते हैं। यह भी उनसे पढ़ते हैं। पढ़ाने वाला तो ज्ञान सागर है ना। वह है विचित्र। उनका चित्र अर्थात् शरीर होता नहीं। उनको कहा ही जाता है निराकार। ऊँच ते ऊँच भगवान। एवर निराकार है। वहाँ सभी निराकारी आत्माएँ ही रहती है। फिर यहाँ आकर साकारी बनती हैं। परमपिता परमात्मा को सब याद करते हैं। वह है आत्माओं का

पिता। लौकिक बाप को परम अक्षर नहीं कहेंगे। यह सब समझ की बात है ना। स्कूल के स्टुडेन्ट पढ़ाई पर अटेन्शन देते हैं जब तक कि कोई मर्तबा पा ले। बैरीस्टर बन गया फिर पढ़ाई बन्द। ऐसे थोड़े ही बैरीस्टर बनकर फिर पढ़ेगा। नहीं। पढ़ाई पूरी हो जाती है। तुम भी देवी देवता बन गये। फिर हमको पढ़ाई की दरकार ही नहीं रहती। 1250 वर्ष देवी देवताओं का राज्य चलता है। यह बातें तुम बच्चे ही जानते हो। बाप तुमको समझाते हैं, तुमको फिर औरों को समझाना पड़े। यह भी ख्याल रखना चाहिए। पढ़ाते नहीं तो टीचर कैसे ठहरे। तुम सभी टीचर्स हो। टीचर के औलाद हो ना तो तुमको भी टीचर ही बनना है। कितने टीचर्स चाहिए पढ़ाने के लिए। जैसे बाप, टीचर, सद्गुरु है वैसे तुम भी टीचर हो। सद्गुरु के बच्चे भी सत। वह कोई सद्गुरु नहीं है। वह गुरु के बच्चे गुरु। सत माना सच। सचखण्ड भी भारत को कहा जाता है। अभी कुड़ खण्ड है। सच खण्ड सच्चा बाप ही स्थापन करते हैं। वह है सच्चा साई बाबा। जब सच्चा बाप आते हैं तो भी बहुत निकल पड़ते हैं। गायन भी है नइया झूलेगी डोलेगी पर डूबेगी नहीं। बच्चों को समझाया जाता है माया के तूफान बहुत आवेंगे। इनसे डरना न है। सन्यासी लोग कब तुमको ऐसे नहीं कहेंगे कि माया के तूफान आवेंगे। उन्हों को पता ही नहीं है नईया को पार कहाँ ले जावेंगे। अज्ञान के घोर अंधियारे में हैं ना। भक्ति है ही अज्ञान। भक्ति से कोई सद्गति नहीं होती है। ज्ञान से सद्गति होती है, फिर दुर्गति किससे होती है। भक्ति से नीचे ही उतरते रहते हैं। भल कहते हैं भगवान आकर भक्ति का फल भक्तों को देते हैं। भक्ति तो जरूर करनी चाहिए। अच्छा भक्ति का फल भगवान आकर क्या देते हैं? जरूर सदगति देंगे। तो इसका मतलब भक्ति से दुर्गति हुई ना। जो भगवान को आकर सद्गति देनी पड़ती है। कहते ठीक हैं कि भक्ति का फल भगवान आकर देंगे; परन्तु कब, कैसे देंगे वह पता नहीं है। भक्ति कब से शुरू होती है कितना समय चलता है कुछ भी पता नहीं है। तुम कोई से पूछो तो कह देंगे यह तो अनादि चलती आई है। परम्परा से चली आई है; क्योंकि कल्प की आयु ही लाखों वर्ष कह देते हैं। तो सभी के लिए कहेंगे परम्परा से चला आया। पूछो शास्त्र कब से सुनी है, कब से पढ़ी है; रावण को कब से जलाना शुरू किया है। कहेंगे परमपरा से। किसको भी मालूम नहीं है। तुमको तो अभी मालूम पड़ता है ना। तो समझने में भी कितना फर्क है। भक्तिमार्ग में मनुष्य कितना दुखी होती रहते हैं। बिल्कुल जैसे तवाई हो जाते हैं। समझते हैं इन्हों का ज्ञान तो कोई नया है। जिन्होंने कल्प पहले समझा है वह झट समझ जाते हैं। ब्रह्मा की तो बात ही छोड़ो। शिवबाबा का जन्म तो है ना जिसको शिवरात्रि कहते हैं। बाप समझाते हैं मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। प्रकृति मनुष्यों सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ; क्योंकि वह तो सभी गर्भ में जन्म लेते हैं। शरीरधारी बनते हैं। मैं तो गर्भ में नहीं प्रवेश करता हूँ। यह नालेज सिवाय परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर के और कोई दे न सके। ज्ञान सागर कोई मनुष्य को नहीं कहा जाता। यह उपमा है ही निराकार की। निराकार बाप आकर आत्माओं को पढ़ाते हैं। समझाते हैं तुम ही कैसे सभी पार्ट बजाते हो। तुम रावण राज्य में पार्ट बजाते2 देहाभिमानी बन पड़े हो। आत्मा ही सभी कुछ करती है वह ज्ञान उड़ गया है। यह तो आरगन्स है ना। मैं आत्मा हूँ, चाहे इनसे कर्म कराऊँ, चाहे न कराऊँ। निराकारी दुनिया में तो हम शरीर रहित बैठी रहती हैं। अभी तुम अपने घर को भी जान गये हो। वह लोग फिर घर को ईश्वर मान लेते हैं। ब्रह्माज्ञानी तत्वज्ञानी है ना। तत्व को ब्रह्म को ईश्वर मान लेते हैं। फिर भी कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावें। अगर कहे ब्रह्म में निवास करेंगे तो ईश्वर अलग हो जाये। यह तो ब्रह्मा को ही ईश्वर कह देते हैं। अहम ब्रह्मास्मी कह देते। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाप को भी भूल जाते हैं। जो बाप विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तो याद करना चाहिए ना; क्योंकि वही स्वर्ग बनाने वाला है। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण। तुम उत्तम पुरुष बनते हो। कनिष्ट पुरुष उत्तम पुरुष के आगे माथा टेकते हैं। उपमा करते हैं। देवताओं के मंदिर में जाकर कितनी महिमा करते हैं। अभी तुम जानते हो हम सो देवता बनते हैं। यह तो बहुत सहज बात है बाजोली खेलना। विराट रूप का भी बतलाया

है। विराटचक्र है ना। वह तो सिर्फ गाते हैं ब्राह्मण देवता..... यह सृष्टि का चक्र अनादि फिरता ही रहता है। सतयुग में देवताएँ इतने वर्ष, फिर चन्द्रवंशी इतने वर्ष। यह तो समझते हो ना। यह ल0ना0 आदि के भी चित्र है ना। बाप आकर सभी को करेक्ट करते हैं। तुमको भी करेक्ट कर रहे हैं; क्योंकि भक्तिमार्ग में जन्म जन्मान्तर तुम जो करते आये हो वह सभी है रांग। इसलिए तुम तमोप्रधान बने हो। भक्तिमार्ग में हर बात रांग है। रांग का फल राइट बाप ही आकर देंगे। अभी है ही अनराइटियस वर्ल्ड। इनमें दुख ही दुख है; क्योंकि रावण का राज्य है ना। सभी विकारी हैं। रावण का राज्य है अनराइटियस। राम का राज्य है राइटियस। यह है कलियुग। वह है सतयुग। तो समझ की बात है ना। इनको शास्त्र उठाते कब देखा। अपना भी नालेज दिया रचना की भी समझानी दी। शास्त्र बुद्धि में इन्हों की होती है। जो पढ़कर सुनाते हैं। वह शास्त्रवादी होते हैं तो उन्हों की बुद्धि में यह सिर्फ वेद शास्त्र ही होंगे। बाप कहते हैं हम जानते हैं यह सभी शास्त्र भक्तिमार्ग के हैं। इनसे तुम नीचे ही गिरते आये हो। मनुष्य कोई ऐसे थोड़े ही समझते हैं। वह पढ़ाई पढ़ने से कोई बैरीस्टर कोई क्या बनते हैं। वह फिर भी चढ़ाई है। तुम्हारी चढ़ाई देखो कैसी है। सीढ़ी कैसे चढ़ते हो। तो सभी का सुख दाता एक ही राम कहा जाता है। राम कहा जाता है शिवबाबा को। ऊँच ते ऊँच वह बाप ही है। और कोई भी मंदिर में तुम जाओ तो सभी को शरीर है। एक शिव ही है जिसका शरीर नहीं है। उनको परमपिता कहते हैं। बाकी सभी को देवता कहते हैं। परमपिता बेहद का बाप जरूर बेहद का वरसा देते हैं। 5000 वर्ष पहले भी स्वर्ग था। तुम स्वर्ग के वासी थे। अभी नर्कवासी हो। राम कहा जाता है बाप को। वह राम नहीं जिसकी सीता चुराई गई। वह कोई सदगति दाता थोड़े ही है। वह राम तो राजा था। महाराजा भी नहीं था। महाराजा और राजा का राज़ भी समझाया है। वह 16 कला सम्पूर्ण तो वह 14 कला। रावण राज्य में भी राजाएँ महाराजाएँ होते हैं ना। वह बहुत साहुकार वह कम साहुकार। इनको कोई सूर्यवंशी चन्द्रवंशी नहीं कहेंगे। यह तो वैश्य शुद्र वंशी हैं। उनमें साहुकार को महाराजा का लकब मिलता, कम साहुकार को राजा का। अभी तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। घोर–अंधियारा लगा पड़ा है। धणी धोणी कोई है नहीं। राजा को भी प्रजा अन्नदाता समझते हैं। अभी तो वह भी गये। बाकी प्रजा का देखो क्या हाल है। लड़ाई झगड़ा आदि कितना है। अभी तुम्हारी बुद्धि में आदि से लेकर अन्त तक सारा नालेज है। यह भी बाप ने आकर समझाया है। रचयिता तो एक बाप ही है। यह ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। यह भी तुम अभी समझते हो। अभी प्रैक्टिकल है। जिसकी फिर भक्तिमार्ग में कहानी बनेगी। अभी तुम प्रैक्टिकल में हो। आधा कल्प तुम राज्य करेंगे। फिर बाद में कहानियाँ हो जावेंगी। चित्र तो रहते हैं। कोई से भी पूछो यह कब राज्य करते थे तो लाखों वर्ष कह देंगे। सन्यासी उदासी आदि कोई भी नहीं जानते। वह हैं ही निवृत्ति मार्ग वाले। तुम हो पवित्र गृहस्थ आश्रम वाले। फिर पवित्र गृहस्थ आश्रम में ही जाना है। स्वर्ग के सुखों को कोई जानते ही नहीं। निवृत्ति मार्ग वाले तो कब प्रवृत्ति मार्ग सिखला न सके। तमोप्रधान मनुष्य यह भी नहीं समझते। सन्यासी कब वैकुण्ठ की वा श्रीकृष्ण पुरी की बातें सुना न सके। गीता भागवद आदि पढ़ना भी उन्हों को हक नहीं है; परन्तु तमोप्रधान बन गये हैं। आगे तो जंगल में रहते थे। उनमें ताकत थी। फिर तमोप्रधान बनने से अन्दर घूस आये हैं। आगे तो जंगल में उन्हों को भोजन पहुँचाते थे। अभी तो वह ताकत ही न रही है। जैसे तुम्हारे में भी वहाँ राज्य करने की ताकत .... अभी कहाँ है। हो तो वही ना। अभी व ताकत न रही है। भारतवासियों का असल जो धर्म था वह अभी नहीं है। अधर्म हो गया है। बाप कहते हैं मैं आकर धर्म की स्थापना, अधर्मों का विनाश करता हूँ। अधर्मियों को धर्म में ले जाता हूँ। बाकी जो बचते हैं वह विनाश हो जावेंगे। फिर भी बाप बच्चों को समझाते हैं कि सभी को बाप का परिचय दो। बाप को ही दुखहर्ता सुखकर्ता कहा जाता है। जब बहुत दुखी होते हैं तब ही बाप आकर फिर बहुत सुखी बनाते हैं। आते भी भारत में ही हैं। यह बना बनाया खेल है। इसमें कुछ भी

बदली हो न सके। कोई कहे हम क्यों नहीं सतयुग में आवेंगे। अरे यह तो अनादि बनाया हुआ ड्रामा का चक्र है, जो फिरता रहता है। समझाने लिए चित्र भी बहुत अच्छे2 हैं। ऐसे थोड़े ही सभी कहेंगे हम सतयुग में आवेंगे। जो जितना ऊँच बनते हैं उतना फिर नीच भी बनते हैं। जो बिल्कुल साहुकार वह बिल्कुल गरीब। यह हिसाब–किताब भी बाप आकर समझाते हैं। यह तुम इस समय ही धारण कर सकते हो। पढ़ाई भी अभी ही पढ़नी है। बाप को शुक्रिया करना चाहिए। याद करना चाहिए। हम हैं गाड फादर का स्टुडेन्ट। गाड फादर हमको पढ़ाते हैं। हमारा तो जैसे कि ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। सर्विस करते हैं ना। भगवान आकर तुम स्टुडेन्ट की सर्विस करते हैं। कहते हैं ऐसे बाप को अथवा टीचर को याद करो। टीचर को याद किया वह भी जैसे कि बाप को याद किया। याद से विकर्म विनाश होंगे। बाप टीचर सद्गुरु तो एक ही है। तुमको 3 चान्स दिया है। बाप को नहीं टीचर को, जो पढ़ाते हैं। स्टुडेन्ट को टीचर को याद करना पड़े ना। जबतक पास हो। तो फिर नई दुनिया में चले जावेंगे। बच्चे जानते हैं कि अभी इस पुरानी में तो रहना नहीं है। यह बिल्कुल ही छी छी गंदी दुनिया है। अपरम्अपार दुख है। छोटेपन में मर जाना, बीमार रहना, आपरेशन कराना, बच्चा पैदा हो तो पेट चिराना.. .... अथाह दुख है। वहाँ फिर अपरम्अपार सुख होते हैं। अभी तुम दोनों को जानते हो। बेहद के बाप से अपरमअपार सुख ले रहे हो। बेहद का सुख है स्वर्ग का। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग है। दुनिया यह भी नहीं जानती हैं। समझते हैं कलियुग तो अभी 40 हजार वर्ष पड़े हैं। और बाप कहते हैं सारा कल्प ही 5000 वर्ष का है। तो मनुष्य घोर अंधियारे में है ना। अभी तुमको बाप समझा रहे हैं। तुमको फिर औरों को समझा(ना) है। बाप कहते हैं निरन्तर मुझे याद करो और कराओ। बाप ही पतित–पावन है। सबसे ऊँचा तो एक है ना। अकासुर बकासुर आदि सभी मनुष्य ही हैं। और कोई होता नहीं है। द्रौपदी ने पुकारा हमको दुशासन नंगन करते हैं। यह भी अभी की बात है। इस जन्म में नंगन न होगी, पवित्र बनेगी तो फिर आधा कल्प के लिए कब नंगन न होगी। वहाँ विकार होता नहीं। रावण राज्य है नहीं। योगबल से सब काम चलता है। बच्चा आता है तो सब सा0 होता है अभी बच्चा होना है। शरीर छोड़ने समय भी साक्षात्कार होता है। अभी जाकर फिर बच्चा बनना है। तुम भी समझते हो हम यह शरीर छोड़कर जावेंगे नई दुनिया में। जिसके लिए ही तुम पढ़ते हो। जितना निश्चय बुद्धि होंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। अनेक प्रकार के संशय बच्चों को आते रहते हैं। बेकायदे काम भी कर लेते हैं। खान–पान आदि की परहेज़ नहीं रखते। मांसाहारी देवता बन न सके। पुरुषार्थ तो करना होता है ऊँच पद पाने लिए। तुम समझते हो फलानी ब्राह्मण ऊँच पद पावेगी। कितने को आप समान बनाती है। उनको ही सदा गुलाब का फूल कहेंगे। कोई आप समान ही नहीं बनाते हैं तो प्रजा क्या बनेगी। कोई तो बहुत साहुकार बन जाते। कोई बहुत गरीब। यह सभी है कर्मों का फल। तुम्हारा भी कर्म का फल होगा ना भविष्य में। बाप ही कर्म अकर्म विकर्म की गति समझाते हैं। अभी तुम बच्चों को यह पैगाम देना है बाप को। बेहद के बाप को याद करो। तो याद करते2 बाप के पास चले जावेंगे। अन्त मते सो गति हो जावेगी। बेहद के बाप से स्वर्ग का 21 जन्मों लिए वरसा मिल जावेगा। फिर 21 पीढ़ी अर्थात् बूढ़ापे तक काल खा न सके। वहाँ मृत्यु का आवाज़ नहीं होता। सिर्फ शरीर बदलने का होता है। कुमार अवस्था को सतोप्रधान अवस्था कहा जाता है। बूढ़े को कहेंगे तमोप्रधान अवस्था। बाप जो समझाते हैं वह फिर औरों को समझाना है। समझावेंगे नहीं तो पद कम हो जावेगा। बहुत हो जावेंगे तो बहुत टाइम बैठ थोड़े ही किसको समझावेंगे। सिर्फ मैसेन्ज देते रहेंगे। अभी थोड़े हैं तो टाइम भी देते हो। झाड़ पहले छोटा होता है फिर धीरे2 बढ़ता जाता है। जब तक सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी दोनों तैयार न हों तब तक लड़ाई लग नहीं सकती। तैयार हो जाते हैं तो फिर लड़ाइयाँ शुरू हो जाती हैं।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

–: शिवबाबा याद है :–